

- 36 कात्तारो वर्त्म डुर्गमम् ।  
 37 सुरङ्गा तु संधिला स्याद्दूमार्गो भुवो उत्तरे ॥ १८५ ॥  
 38 चतुष्पथे तु संस्थानं चतुष्कं  
 39 त्रिपथे त्रिकम् ।  
 40 द्विपथं तु चारपथो  
 41 गजाद्यद्या तसंकुलः ॥ १८६ ॥  
 42 वाटापथः संसरणं श्रीपथो राजवर्त्म च ।  
 43 उपनिष्क्रमणं चोपनिष्करं च महापथः ॥ १८७ ॥  
 44 विपणिस्तु बणिग्मार्गः  
 45 स्थानं तु पदमास्पदम् ।  
 46 श्लेषस्त्रिमार्ग्याः प्रङ्गाटं  
 47 बहुमार्गो तु चत्वरम् ॥ १८८ ॥  
 48 श्मशानं कर्वीरः स्यात्पितृप्रेतादनं गृहम् ।  
 49 गेहभूर्वास्तु  
 50 गेहं तु गृहं वेश्म निकेतनम् ॥ १८९ ॥  
 51 मन्दिरं सदनं सद्य निकायो भवनं कुटः ।

36. Beschwerlicher Weg. — 37. Unterirdischer geheimer Gang (2 W.) — 38. Ort, wo vier Wege zusammenkommen (3 W.). — 39. Ort, wo drei Wege zus. (2 W.). — 40. Ort, wo zwei Wege zus. (2 W.). — 41. Breiter Weg, auf dem Elephanten u. s. w. gehen können. — 42. 43. Hauptstrasse (7 W.). — 44. Strasse, in der Handel getrieben wird (2 W.). — 45. Ort (3 W.). — 46. Ort, wo drei Wege zusammenstossen<sup>1</sup>). — 47. Ort, wo viele Wege zus. — 48. Gottesacker (6 W.). — 49. Platz, auf dem ein Haus steht. — 50—55. Haus (31 W.).

1) Vgl. jedoch 39.